
आलस्य और अलबेलापन - 4

➤➤ अंतरमुखता तो परिणाम है... और उसकी विधि है:-

- आत्मिक स्वरूप की साधना
- स्व चिंतन
- ज्ञान चिंतन
- मौन अर्थात् चुप रहना नहीं बल्कि
 - स्वरूप में स्वयं को टिकाना
 - स्वधर्म का पालन करना
 - स्वदेश की स्मृति में रहना

➤➤ बाह्यमुखता भी परिणाम है... और उसकी विधि है:-

- देह को देखना
- परचिन्तन / परदर्शन
- हृद की बातों में स्वयं को फंसाना

➤➤ पुरुषार्थ की तड़प बढ़ाने के लिए

- अपने बचपन के दिनों को देखो
- बांधेलियों की लगन को देखो
- कड़ी परीक्षाओं के लिए स्वयं को तैयार करना

→ आने वाले समय में आपको आत्माओं से सम्मान, सहयोग और प्यार नहीं मिलेगा... क्या आप तैयार हैं ?

→ हमारी आंतरिक स्थिति किसी दूसरे व्यक्ति / परिस्थिति पर आधारित न हो... निराधार / स्वतंत्र हो जाओ
